लेवे खिताब इमाम का, बातून खुले न इन बिगर।
सो खोल के भिस्त दई सबों, जब आए इमाम आखिर।। ४२ ।।

कइयों ने यहां इमाम होने का दावा किया, परन्तु कुरान के बातूनी अर्थ आखिरी इमाम श्री प्राणनाथ जी के बिना कोई खोल नहीं सका और न कोई दुनियां को अखण्ड बहिश्तों में कायम कर सका।

थी रात अंधेरी सबन में, बका दिन देखाए करी फजर।
मकसूद किया सबन का, जब आए इमाम आखिर।। ४३ ।।

सबके अन्दर (मन में) अज्ञानता का अन्धकार भरा हुआ था। आखिरी इमाम श्री प्राणनाथजी ने अखण्ड ज्ञान जाहिर कर उजाला कर दिया। इससे सबको परमधाम की पहचान कराकर सबकी मनोकामना पूरी की।

इलम लदुन्नी काहूं न हुता, कर जाहेर मिटावे कुफर।
दिया सुख कायम सब को, जब आए इमाम आखिर।। ४४ ।।

किसी के पास जागृत बुद्धि का ज्ञान (तारतम वाणी) नहीं था, जिससे सारे संसार के संशय मिटते। जब आखिरी इमाम श्री प्राणनाथजी आए तो सबको अखण्ड सुख प्राप्त हुआ।

कोई बेसक दुनी में न हता, गई दुनियां एती उमर।
सो दृढ़ कर दई हक सूरत, जब आए इमाम आखिर।। ४५ ।।

इस संसार में आज दिन तक किसी के संशय मिटे नहीं थे। अब आखिरी इमाम श्री प्राणनाथजी ने आकर सबके दिलों में पारब्रह्म की पहचान कराकर उनके हृदय में पारब्रह्म के स्वरूप की दृढ़ता करा दी।

इमाम नूर है अति बड़ो, पर सो अब कह्यो न जाए।
मेला होसी जब मोमिनों, तब देऊंगी नीके बताए।। ४६ ।।

आखिरी इमाम श्री प्राणनाथजी के स्वरूप का तेज अत्यन्त अधिक है जो अभी कहा नहीं जाता। जब मोमिनों का मेला होगा, तब मैं उसको अच्छी तरह से बताऊंगी।

।। प्रकरण ।। ३२ ।। चौपाई ।। ११४५ ।।

सनन्ध–कजा की

सुनियो दुनियां आखिरी, भाग बड़े हैं तुम।
जो कबूं कानों न सुनी, सो करो दीदार खसम।। १ ।।

हे आखिरी दुनियां के लोगो! सुनो, तुम्हारे बड़े भाग्य हैं। जिस पारब्रह्म के बारे में कभी तुमने सुना भी नहीं था, उसी अक्षरातीत पारब्रह्म श्री प्राणनाथजी के, जो सबके खसम (स्वामी) हैं, आकर दर्शन करो।

कई राए राने पातसाह, छत्रपति चक्रवर्त।
ताए हक सुपने नहीं, सो गए लिए गफलत।। २ ।।

कई राजा, राणा, बादशाह, छत्रपति, चक्रवर्ती हो गए, पर उनको सपने में भी पारब्रह्म का पता नहीं चला। इसी संशय के साथ वह चले गए।

कई देव दानव हो गए, कई तीर्थंकर अवतार।
किन सुपने न श्रवनों, सो इत मिल्या नर नार।। ३ ।।

कई देवता, दानव, तीर्थंकर, अवतार हुए। उन्होंने सपने में भी पारब्रह्म के विषय में नहीं सुना था। अब इस दुनियां के लोगों को यहां पारब्रह्म साक्षात् मिले हैं।

Nijanand App

करी अनेकों बंदगी, इस्क लिया कई जन।
तिन काहूं ना नजीक, सो इत मिल्या सबन।।४।।

दुनियां में अनेक लोगो ने बन्दगी की, कई लोगों ने प्रेम मार्ग से भी भक्ति की। उनमें से भी किसी को भी पारब्रह्म की प्राप्ति नहीं हुई। वही पारब्रह्म यहां सबके लिए आ गए हैं।

चौदे तबक के खावंद, कर कर गए उपाए।
तित परदा सबन पर, सो इत दिया उड़ाए।।५।।

चौदह लोकों के मालिकों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) ने भी कई उपाय किए, परन्तु उनके सामने भी परदा पड़ा रहा। अब उनके भी संशय मिट गए।

तुम जानते थे मलकूत को, हम सिर एही बुजरक।
तिनको न बका ख्वाब में, सो इत पाया सबों हक।।६।।

तुम सब यही जानते थे कि बैकुण्ठ ही सबसे बड़ा स्थान है। उस बैकुण्ठ के मालिक भगवान विष्णु को भी कभी सपने में भी पारब्रह्म की प्राप्ति नहीं हुई। वह पारब्रह्म अब यहां सबके लिए आ गए हैं।

मारता था राह दुनी की, सबका था दुस्मन।
जित हिदायत एक हादी की, तित भी मारे तिन।।७।।

यह अजाजील फरिश्ता सबका दुश्मन बनकर रास्ता रोकता था। श्री श्यामाजी महारानी (सतगुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज) पारब्रह्म का रास्ता बताते थे। उनके मानने वालों को भी इसने परेशान किया।

एक राह थी अव्वल, तित भी दिए फिराए।
कई इलम देखाए जुदे डारे, बल सैतान कह्यो न जाए।।८।।

सतगुरु श्री देवचन्द्रजी ने सबको पारब्रह्म का एक ही रास्ता बताया था। इस शैतान ने उनके मानने वालों के मन फिरा कर एक रास्ते से भटका दिया। इस शैतान ने कई प्रकार के ज्ञान ग्रन्थ दिखाकर अलग-अलग भटका दिया। ऐसे शैतान की ताकत का वर्णन कैसे करूं?

बैठ दुनी के दिल पर, चलाया हुकम।
हक राह छुड़ाए डारे उलटे, ए दुस्मने किया जुलम।।९।।

इस दुश्मन ने ऐसा जुल्म किया कि दुनियां के दिलों पर बैठकर अपनी हुकूमत चलाई तथा पारब्रह्म का रास्ता छुड़ाकर उलटा दुनियां में भटका दिया।

ए दुस्मन देखाया रसूलें, पर इनसों चल्या न किन।
आप जैसा होए के, राह मारी सबन।।१०।।

रसूल साहब ने भी इस अजाजील जो दुश्मन बनकर बैठा है, उससे सबको सावचेत (सर्तक) कराया, परन्तु उसके सामने किसी की ताकत नहीं चली। इस शैतान ने जीवों के अन्दर ही बैठकर सबको रास्ते से भटका दिया।

सो काफर उड़ाए दिया, जिन मारी थी सबकी राह।
सो जानिए हता नहीं, जब आया हक पातसाह।।११।।

ऐसे काफिर को जिसने सबका रास्ता रोक रखा था, श्री प्राणनाथजी ने जड़ से ही उखाड़ दिया। मानो वह कभी था ही नहीं।

Nijanand App

मैं बड़ भागी तुमें तो कहे, जो आए इन आखिर।
तो कहूं जो दूर होवही, अब देखोगे नजर।। १२ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं, हे दुनियां वालो! मैंने तुम्हें भाग्यशाली इसलिए कहा है कि तुमने दुनियां में उस आखिरत के समय तन धारण किया है। अब पारब्रह्म के आने का समय दूर नहीं है, तुम उनके साक्षात् दर्शन करोगे।

यामें बड़े रूह मोमिन, सो जुबां कह्यो न जाए।
अबहीं इमाम के कदमों, देखोगे सब आए।। १३ ।।

इस दुनियां में सबसे बड़े मोमिन हैं, जिनकी सिफत (गुण, प्रशंसा) इस जबान से नहीं की जाती। तुम शीघ्र ही उन मोमिनों के दर्शन श्री प्राणनाथजी के चरणों में आकर करोगे।

ए कह्या रसूलें अव्वल, ए जो चौदे तबक।
इनमें काजी आखिर दिनों, इत कजा जो करसी हक।। १४ ।।

रसूल साहब ने पहले से यही कहा था कि चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में पारब्रह्म आखिर में आकर सबका न्याय करेंगे।

रसूलें इत आए के, पेहेलें किया पुकार।
आवसी रब आलम का, तब हूजो खबरदार।। १५ ।।

रसूल साहब ने पहले से ही आकर सबको सावचेत (सावधान) किया कि आखिरत के समय सारी दुनियां का मालिक आएगा। उस समय तुम सावचेत (सतर्क) रहना।

लिख्या आगम कदीम का, सो आए मिल्या दिन।
याही सदी आखिर की, पुकार करे सब जन।। १६ ।।

पहले से ही न्याय के दिन की बात लिखी थी, वह दिन अब आ गया है। यही वह आखिर की सदी (शताब्दी) है, जिसके लिए संसार के सब ग्रन्थों ने भविष्यवाणी कर रखी थी।

नूर अकल ले लदुन्नी, हुकमें किया पसार।
महंमद मेंहेदी ईसा आवसी, आगे चेतावें नर नार।। १७ ।।

रसूल साहब ने भी जागृत बुद्धि के कलमे से संसार में सबको बताकर सावचेत कर दिया कि आखिरत को मुहम्मद मेंहदी और ईसा रूह अल्लाह आएंगे।

आप इमाम अजूं गोप है, होत आगे रोसन नूर।
रात अंधेरी क्यों रहे, जब ऊग्या कायम सूर।। १८ ।।

इमाम साहब के आने से पहले ही सारे संसार को उनके ग्रन्थों से आने की जानकारी हो गई थी। अब जब श्री प्राणनाथजी जाहिर हो गए हैं तो अब दुनियां में अज्ञानता कैसे रहेगी?

सांच झूठ तफावत, जैसे दिन और रात।
सांच सूर जब देखहीं, तब कुफर रात मिट जात।। १९ ।।

सत और झूठ में दिन और रात जितना फर्क है। जब सच्चे ज्ञान के सूर्य को देखेंगे, तो अज्ञानता हट जाएगी।

Nijanand App

जो लों थे परदे मिने, दुनियां उरझी तब।
सो परदा अब खोलिया, दिया मन चाह्या सुख सब।। २० ।।

जब तक पारब्रह्म परदे में थे तब तक उनकी पहचान किसी ने नहीं की थी। तब तक दुनियां उलझन में थी। अब वह सारे संशय मिट गए हैं और सबको मनचाहा सुख दे रहे हैं।

जो लों जाहेर हक ना हुए, तो लों मारे दिमाक।
हक प्रगटे कुफर मिट गया, सब दुनियां हुई पाक।। २१ ।।

जब तक पारब्रह्म जाहिर नहीं हुए थे तब तक सब अपने-अपने अहंकार में डूबे थे। पारब्रह्म के प्रगट होने से सबके संशय मिट गए और सब दुनियां पाक हो गई।

जब कुफर कछू ना रह्या, तब दुनियां हुई एक दीन।
ए नूर कजा का झिल मिल्या, आया सबों आकीन।। २२ ।।

जब श्री प्राणनाथजी की तारतम वाणी का प्रकाश संसार में जगमगाएगा, तो सभी झूठ की पूजा बन्द कर एक पारब्रह्म पर यकीन लाकर एक दीन में आ जाएंगे।

दुनियां टेढ़ी मूल की, ताको गयो पेड़ से बल।
पाक किए सब इमामें, कुफर गया निकल।। २३ ।।

दुनियां शुरू से ही टेढ़ी है। संकल्प-विकल्प में पड़ी है। वह संशय श्री प्राणनाथ जी ने मिटाकर टेढ़ापन हटा दिया और सीधा रास्ता बता दिया।

पुकार कह्या वेद कतेबों, पर बस न किया काहूं दिल।
कर कर मेहेनत कई थके, पर हुआ न कोई निरमल।। २४ ।।

वेद और कतेबों ने पारब्रह्म के लिए तरह-तरह का ज्ञान दिया, पर किसी के संशय मिटाकर किसी के दिल को जीत नहीं सके। कई धर्माचार्य गुरुओं ने इन ग्रन्थों के ज्ञान से मेहनत तो की, पर किसी का संशय मिटा नहीं।

ना तो कई बुजरक हुए, कैयों करियां नसीहत।
ओ मुरीद विचारे क्या करें, किनें पीर न पाई मारफत।। २५ ।।

दुनियां में बड़े-बड़े ज्ञानी अगुवे हो गए हैं जिन्होंने अपने चेलों को सिखापन (शिक्षा) तो दी, पर वह चेले भी बेचारे क्या करें जब उनके गुरुओं को ही पारब्रह्म की पहचान नहीं हुई।

सो इमामें इत किए, सब जन के मन बस।
होए ना किन इमाम को, इन जुबां ए जस।। २६ ।।

अब इमाम साहब श्री प्राणनाथजी ने आकर सबको पारब्रह्म की पहचान कराकर अपने चरणों में ले लिया (वश में कर लिया), इसलिए ऐसे इमाम साहब की साहेबी का वर्णन इस जबान से नहीं होता।

सो इमाम इत आइया, इन जिमी हिन्दुस्तान।
सब तलबें याही दिसा, चौदे तबक की जहान।। २७ ।।

वह इमाम साहब (स्वामी श्री प्राणनाथजी महाराज) अब इस हिन्दुस्तान की धरती पर आए हैं। जिनके वास्ते सारी दुनियां वाले इन्तजार में थे तथा चाह लेकर बैठे थे।

Nijanand App

पर मुझे प्यारी बरारब, जिन जिमी आए रसूल।
मेहेर नजर महंमद की, पर काफर गए सब भूल।। २८ ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि मुझे तो अरब की जमीन प्यारी है। जहां पर रसूल साहब सबसे पहले आए और उन्होंने अपनी नजरे-करम से खुदाई ज्ञान फैलाया। काफिर लोग सब भूल गए।

पीछे केहेर नजर करी, सो भी वास्ते मेहेर।
पर काफर जो उलटे, सो देखे सब जेहेर।। २९ ।।

अब आखिरत के समय में इमाम साहब श्री प्राणनाथजी ने ऐसे काफिरों पर अपनी कड़ी नजर की, वह भी उनको सीधे रास्ते पर लाने के लिए, परन्तु काफिर लोग उलटा ही सोचते हैं और इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) से दुश्मनी करते हैं।

नोट : यह प्रसंग दिल्ली का है, जहां कहर नजर कर औरगंजेब को कुरसी से गिराया था।

केहेर नजर देखाए के, फेर लिए मेहेर मांहें।
मुस्लिम नाम धराए के, बैठे मुस्लिम की छांहें।। ३० ।।

कड़ी नजर दिखाकर फिर अपनी नजरे-करम से उनको चरणों में ले लिया। अपना नाम भी मुसलमानों का रखकर (सैयद मुहम्मद इबन इस्लाम) उनके अन्दर बैठ गए।

अब तो लगे सब बंदगी, आया भला आकीन।
नर नारी हक कलमें, कायम खड़े हैं दीन।। ३१ ।।

अब सबको यकीन आ गया और सब बन्दगी करने लगे। अब सब नर-नारी हक की कलमे (तारतम) को सच्चा मानकर एक दीन (निजानन्द धर्म) में आ गए।

पेहेले बीतक रसूलसों, सो भी सुनो नेक बोल।
आरब समझें आरबी, दोए कहूं लुगे दिल खोल।। ३२ ।।

पहले रसूल साहब की थोड़ी सी हकीकत बताता हूं जिनके वचनों को सुनो, क्योंकि अरब के रहने वाले अरबी भाषा में ही समझेंगे, इसलिए दो-चार शब्द दिल खोलकर अरब वालों के लिए कहता हूं।

।। प्रकरण ।। ३३ ।। चौपाई ।। ११७७ ।।

सनन्ध–आरबी की

सम्मेन कलिम कलामी, नास कुरब अना कसीर।
नेक मैं कहुं बोली मेरी, आदमी कबीले मेरे बहुत हैं।
अना हाकी हकाइयां कलूब अना, लिसान इस्म कबीर।। १ ।।
मैं कहुं बातें दिल मेरे की, साथ मेरे नाम बड़े हैं।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि अब मैं अरब की बोली में बोलता हूं। अरब में मेरे मानने वाले बहुत हैं। मैं अपने दिल की बात कहता हूं। मैं कई नामों से जाना जाता हूं।

Nijanand App